



शिमला। हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री राजा वीरभद्र सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारी बहन।



हैदराबाद। आ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कुलदीप।



बुटवल-नेपाल। पुनरावेदन अदालत के मुख्य न्यायाधीश कोलेन्द्र शमशेर जाबरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.कमला।



काठमाण्डू-नेपाल। नेपाल के इन्स्पेक्टर जनरल ऑफ पुलिस कुबेर सिंह राना को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.किरण।



दिल्ली-लक्ष्मीनगर। बी.बी.त्यागी, लीडर ऑफ हाऊस एमसीडीसी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.पुष्पा।



धुरी-पंजाब। एस.डी.एम. ईशा सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.मूर्ति एवं ब्र.कु.सुनिता।



नालंदा। रेलवे कोच फैक्ट्री के मुख्य प्रबंधक राधेश्याम शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.पूनम तथा ब्र.कु.अनुपमा।



सेंट पीटर्सबर्ग (रशिया)। भारतीय काउन्सलर एन.पार्थसारथी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.संतोष।



सेनफ्रांसिस्को। भारतीय काउन्सलर एन.पार्थसारथी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात ब्र.कु.गीता एवं ब्र.कु.सुजाता।



फिजी। फिजी के राष्ट्रपति की धर्मपत्नी आदी कोइला नाइला को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.भावना।

मनुष्य का मन एक कम्प्यूटर की तरह काम करता है। जैसे कम्प्यूटर में दो किस्म की (Memories) चेतना होती है। एक अस्थायी चेतना, दूसरी स्थायी, जो भी डेटा हम कम्प्यूटर में इनपुट करते हैं वो सबसे पहले अस्थायी चेतना में दर्ज होता है। बाद में उसी डेटा को हम (Save) संचय करना चाहें तो सेकंडरी मेमोरी या परमानेंट मेमोरी या हार्ड डिस्क में (Transfer) कर देते हैं। क्या फर्क होता है दोनों (Memories) में? प्राइमरी (Memories) में जो भी डेटा होता है मान लो पावर चली जाये तो वो रहता नहीं। और सेकंडरी मेमोरी पर हमेशा बना रहता है। सेकंडरी मेमोरी से डेटा को जब चाहें हम दुबारा देख सकते हैं। बिल्कुल कम्प्यूटर की तरह हमारा माइंड काम करता है। एक प्राइमरी मेमोरी की तरह जिसको हम (Conscious Mind) चेतन मन कहते हैं। दूसरा सेकंडरी मेमोरी की तरह जिसे हम (Subconscious Mind) कहते हैं। हमारी जिनगी में जो भी अनुभव होते हैं वो सब हमारे (Subconscious Mind) पर स्थायी रिकार्ड होते हैं। जैसे सॉफ्टवेयर जिम्मेवार होते हैं एक कम्प्यूटर की फंक्शनिंग में, उसी तरह से जो हमारे अनुभव हैं यह बिल्कुल सॉफ्टवेयर की तरह काम करते हैं और हमारी जिंदगी चलाने में काम करते हैं। इसको हम सॉफ्टवेयर ऑफ लाईफ कह सकते हैं। यह कोई प्री लोडेड सॉफ्टवेयर नहीं है। यह किसी सॉफ्टवेयर इंजीनियर ने भी नहीं बनाये हैं, यह सॉफ्टवेयर हमारे खुद के बनाये होते हैं। जो कुछ भी हम जिनगी में देखते हैं, पढ़ते हैं, सुनते या अनुभव करते हैं वो सबकुछ हम नियमित रूप से फिल्टर करके अपनी हार्ड डिस्क या सब-कॉन्सेस पर रिकार्ड करते रहते हैं। और सारे परिणाम सारे जजमेंट वहीं से आते हैं। अगर हमारी डाऊन फेज लाईफ है तो प्रतिक्रिया नकारात्मक रहती है उसका कुल कारण यह है कि जो हमारे सॉफ्टवेयर रन कर रहे हैं हमारे अनुभव के रिलेटेड सब-कॉन्सेस माइंड में वो नकारात्मक हैं। अगर आपको प्रतिक्रिया सकारात्मक में परिवर्तित करनी है तो सॉफ्टवेयर चेंज करने चाहिए तभी प्रतिक्रिया सकारात्मक आयेगी। कारण हमारे अंदर है और हम ढूँढते हैं बाहर। एक कहानी है कि एक आदमी लाईट के खंबे की रोशनी में कुछ ढूँढ रहा था, तभी उसका एक दोस्त आया भाई क्या ढूँढ रहे हो तो उसने कहा मेरी चाबी गुम हो गई। उसके दोस्त ने उसके साथ चाबी ढूँढना चालू कर दिया, देर तक जब चाबी नहीं मिली तब दोस्त ने कहा कि तुम्हें विश्वास है कि चाबी यहाँ पर ही गिरी थी? तो उसने कहा

चाबी तो घर में गिरी थी। तब दोस्त को हैरानी हुई तो उसने कहा भले आदमी तेरी चाबी घर में गिरी थी तो तू यहाँ क्यों ढूँढ रहा है? तो आदमी बोला घर में लाईट नहीं है। क्या बात है! घर में अंधेरा है तो चाबी कैसे ढूँढें वहाँ पर और लाईट के खंबे के नीचे रोशनी थी तो वहाँ पर ही ढूँढने लगे। इस बात को सुनकर हँसी आयेगी। लेकिन जिन 75 प्रतिशत लोगों की हम बात कर रहे हैं जो कि डाऊन फेज में मेंटल प्रेशर के नीचे टूट जाते हैं वो क्या कर रहे हैं? समाधान आपके हाथ में है और ढूँढ बाहर रहे हैं। अगर अपने सॉफ्टवेयर को चेंज करना चाहते हैं तो अपनी प्रतिक्रिया को चेंज करना पड़ेगा।

कम्प्यूटर में सॉफ्टवेयर चेंज करना हो तो दो

चेतना जगाओ..

ब्र.कु. दिलीप राजकुले, ओम शान्ति मीडिया

अपने लक्ष्य को अपने अंदर की आँखों के सामने लाकर दृढ़ता से कार्य करें तो सब-कॉन्सेस में सही रूप से सारी प्रतिक्रिया दर्ज होगी और जीवन उमंग-उत्साह से भरपूर तनावमुक्त रहेगा।



चीजें जानना जरूरी है। पहली चीज होती है हार्डडिस्क को कैसे कनेक्ट करें। दूसरी चीज क्या होती है सॉफ्टवेयर की भाषा या प्रोग्रामिंग की भाषा जाननी होती है। इन दो चीजों को जाने बिना किसी सॉफ्टवेयर में कैसे चेंज किया जा सकता? बिल्कुल इसी तरह हयुमन माइंड के अगर सॉफ्टवेयर चेंज करने हैं तब भी आपको दो बातें जानना जरूरी है। पहली बात यह है सबकॉन्सेस तक कैसे पहुँचें, जैसे हार्ड डिस्क के लिए जानना जरूरी है कि हार्ड डिस्क को कैसे जोड़ें? वैसे ही सबकॉन्सेस के साथ जुड़ना और उसमें चेंज करना है तो यह जानना जरूरी है कि उससे कनेक्ट कैसे होना चाहिए? और कनेक्ट कर लिया फिर आपको पता होना चाहिए कि कम्प्यूटिकेट कैसे कर पाएंगे। माना सबकॉन्सेस माइंड के साथ कम्प्यूटेट कैसे हो? उसके लिए जब कम्प्यूटर के सॉफ्टवेयर में कोई बदलाव लाना है तो आपको प्रोग्रामिंग लैंग्वेज आनी चाहिए। उसी तरह अगर सबकॉन्सेस माइंड के अंदर कोई चेंज लाना है तो आपको उसकी प्रोग्रामिंग लैंग्वेज आनी चाहिए कि सब-कॉन्सेस में कैसे चेंज किया जाये। अब वैज्ञानिकों ने इस पर काफी काम किया है। साइंस के हिसाब से सब-कॉन्सेस माइंड से कनेक्ट होने के लिए

जाती है। ऐसी स्टेज में आप अपनी सब कॉन्सेस से कनेक्ट हो जाते हैं। अगर रिलीजन के हिसाब से देखें तो मेडिटेशन क्या होता है? हमारे यहाँ तो तपस्या, साधना की बहुत पुरानी परम्परा है। मुस्लिम धर्म में भी नमाज पढ़ते वक्त या किसी भी धर्म में भगवान से जुड़ने के लिए सबसे पहले आँख बंद करके रिलेक्सेशन के लिए ही कहा जाता है। अब दूसरे स्टेज पर जाते हैं कि आप सब-कॉन्सेस से कनेक्ट तो हो जाते हैं अब परिवर्तन कैसे करें? या प्रोग्रामिंग को परिवर्तन करने के लिए भाषा को कैसे यूज करें? तो साइंस यह कहती है कि सब कॉन्सेस से कम्प्यूटेट करते वक्त हमें दृढ़ता को इस्तेमाल करना चाहिए। दृढ़ता का मतलब होता है सम्पूर्ण सकारात्मकता। दृढ़ प्रतिज्ञावत् होकर वर्तमान में अभी ही भीतर से सकारात्मक होने की अत्यंत जरूरत है। कोई को भी कुछ कर गुजरना होता है तो उसे सम्पूर्ण दृढ़ संकल्पबद्ध होने की जरूरत है। तो अपने सबकॉन्सेस माइंड में परिवर्तन लाने के लिए अपने लक्ष्य को अपने अंदर की आँखों के सामने लाकर दृढ़ता से सकारात्मकता से कार्य करें तो सब-कॉन्सेस में सही रूप से सारी प्रतिक्रिया दर्ज कर सकते व जीवन को तनावमुक्त रख सकते हैं।